डाक पंजीयन संख्या : श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई : राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 5 अक्टूबर - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - पाँच | अंक - छठा | अक्टूबर-2007 | मासिक पत्रिका

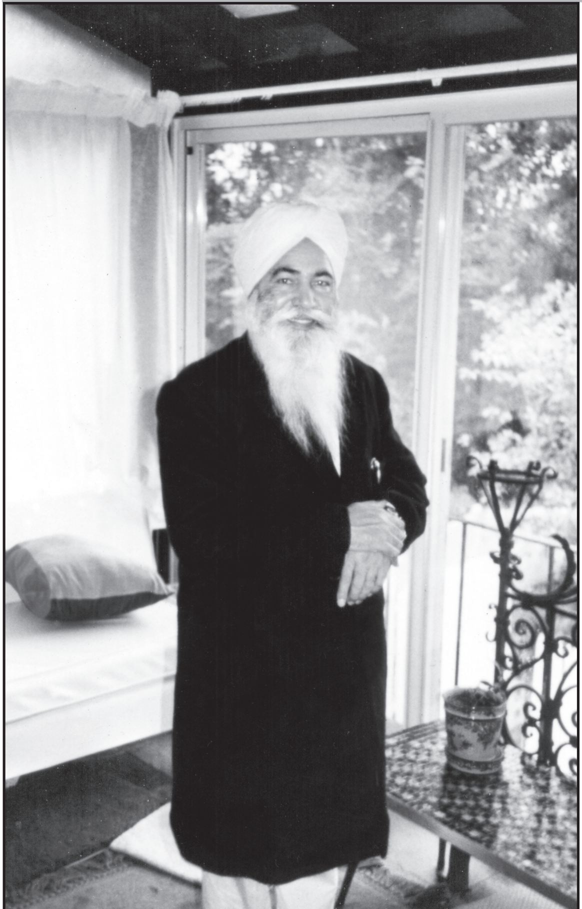

3
रास्ता
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

7
पड़ाव
गुरु नानकदेव जी की बानी सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी 16 पी एस आश्रम, राजस्थान

21
शादी-तलाक
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर –335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

उप सम्पादक : नंदिनी, **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया, **सहयोग** : रेणु सचदेव व राजेश

सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 0154-246 4601 **Mobile** : 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website** : www.ajaibbani.org

वाह मेरे सावन, वाह मेरे दाता

वाह मेरे सावन, वाह मेरे दाता, दुःखियां दा सहारा तूं,
घट-घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सबतों न्यारा तूं, (2)

1. भिखारी ते राज करावे, राजा ते भिखारी हो,
खल मूर्ख ते पंडित करबो, पंडित ते मुकधारी हो, (2)
करके झोली भिछिया लैंदा (2), बनदा किते दातारा तूं
घट-घट दे विच.....

2. जल ते थलकर थल ते कुआं, कूप ते मेर करावे हो,
धरती ते आकाश चढ़ावे, चढ़े आकाश गिरावे हो, (2)
जिसदा जग ते कोई ना राखा (2), आपे बने सहारा तूं,
घट-घट दे विच.....

3. तेरे बाजो कोई ना खाली, हर इक विच समाणा हो,
घट-घट दे विच जोत है तेरी, क्या राजा क्या राणा हो, (2)
लीला तेरी अजब न्यारी (2), हर थां करे इशारा तूं,
घट-घट दे विच.....

4. कोडे राक्षस वरगे तारे, तारया वलि कंधारी हो,
पापण गणकां तारी दाता, तेरी लीला न्यारी हो, (2)
कदे बैठदा हट खोलके (2), करे कदे जमींदारा तूं,
घट-घट दे विच.....

5. मांवां नूं हैं पुत्र प्यारे, तैनूं भगत प्यारे हो,
भगतां दे वस होके दाता, सारे काज सवारे हो, (2)
'अजायब' दी किस्मत जागी (2), मिलया सावन प्यारा तूं,
घट-घट दे विच.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

रास्ता

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

बहुत प्यार भरा शब्द है। प्रभु इंसान के जामें में 'शब्द-रूप' होकर रहते हुए न्यारा है; हर घट के अंदर विराजमान है। देह करके जब तक हुक्म होता है वह न्यारा, सर्गुण और निर्गुण भी है। यह समझ तब आती है जब हम अंदर जाकर सच्चाई को खुद देख लेते हैं। प्रभु जिस आत्मा को बख्शना चाहता है उसे सबसे पहले गुरु की शरण में लाता है। सन्त-सतगुरु उस आत्मा को 'नाम' के साथ जोड़ते हैं। जिस आत्मा के अंदर मुद्दतों से 'नाम' की प्यास होती है उसे सन्त इस पानी को पीने की युक्ति बताते हैं जिससे हमारी आत्मा तृप्त हो जाती है। इसे पूरक भी कहते हैं, जिंदगी का पानी भी कहते हैं।

वही भाग्यशाली जीव हैं जिन्हें 'नाम' मिल जाता है, जीते जी गुरु की, मालिक के प्यारों की शरण मिल जाती है। सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि दो **रास्तें** हैं, एक नीचे चौरासी की तरफ नर्कों में जाता है और दूसरा ऊपर सच्चखंड में जाता है जो जन्म-मरण का रोग मिटाता है।

आप प्यार से बताते हैं कि नीचे नर्कों की तरफ जाने वाला **रास्ता** हमें विषय-विकारों, मान-बड़ाई में फंसाकर अज्ञानता के अंधेरे में फेंक देता है लेकिन जब हम महात्मा की बताई हुई युक्ति के मुताबिक ऊपर के **रास्तें**, सच्चखंड में जाते हैं वहां हमें प्रकाश और ज्ञान मिलता है। महात्मा ने हमें सच्ची रहनुमाई करने के लिए 'नाम' के साथ जोड़ा होता है, वह कदम-कदम पर हमारी रक्षा करते हैं।

महात्मा हमें बताते हैं कि नर्क का **रास्ता** छोड़कर सच्चखंड का **रास्ता** पक्के दिल से पकड़कर अपनी मंजिल सच्चखंड पहुँच जाना चाहिए। इसी को गुरुमत और मनमत कहकर बयान किया है।

गुरुमत हमें अज्ञानता से निकालकर प्रकाश और ज्ञान की तरफ ले जाती है लेकिन मनमत पर चलने की वजह से हमें नर्क चौरासी मिलते हैं। जब हम दोनों आँखें बंद करके सन्तों के बताए हुए सिमरन से एकाग्रता प्राप्त कर लेते हैं, तब हम सूरज, चंद्रमा, तारे सब कुछ अंदर ही देख लेते हैं। गुरु स्वरूप भी अंदर है जिसने हमारी रहनुमाई करनी है, उसी को प्राप्त करके सच्चा शिष्य बन जाता है। गुरु की सच्ची इज्जत अंदर दिल में ठाठे मारने लग जाती है।

जो महात्मा अंदर गए जिन्होंने अंदर खुद सच्चाई को देखा कि गुरु क्या ताकत है? अंदर के मंडलों में इसकी क्या महानता है? उनकी बानियों से हमें पता लगता है कि उनके दिल में अपने गुरु के लिए कितनी तड़प और कितना प्यार था। वे उनके दर्शनों के लिए लोचते थे।

मैं आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का छोटा सा शब्द रख रहा हूँ। आप ये लाइनें सतसंग में भी पढ़ते हैं कि उस वक्त की हुकूमत ने आपको किस तरह की तकलीफें देकर शहीद किया। आपके सिर में गर्म रेत डलवाया, आपको गर्म तवे पर बिठाया लेकिन आपने इसे परमात्मा का मीठा भाणा माना। आपने अपने गुरु की बड़ाई की अगर गुरु में बल है तो दुनिया या काल के जीव कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

हमारी यह हालत है अगर मामूली सा बुखार आ जाए हालांकि यह हमारे अपने ही कर्मों का होता है या और कोई आफत आ जाए जबकि ये समस्याएं हमारी अपनी ही बनाई होती हैं लेकिन हम गुरु पर अभाव ले आते हैं। गुरु को पत्र भी लिखते हैं कि आप दया करें लेकिन जो थोड़ा सा भी अंदर जाता है उसे गुरु बहुत प्यारा होता है।

सेठ हीरा लाल की मिसाल आपके सामने है। हीरालाल का बहुत बड़ा ऑपरेशन हुआ, उसने यही कहा कि बाबा जी को पत्र मत लिखना उन्हें सब कुछ पता है। मैं बाहरी तौर पर उन्हें परेशान नहीं करना चाहता। बहुत से प्रेमी हैं जो अंदर जाकर सच्चाई को देखते हैं; वे नहीं चाहते कि हम गुरु पर बोझ बनें।

हमें सन्त-महात्माओं की बानियों से पता लगता है कि गुरु के दर्शन कितने महान होते हैं। देवी-देवता भी इन दर्शनों के लिए तरसते रहे। योगी लोगों ने घर-बार छोड़कर जंगलों में डेरे लगाए, भूख-प्यास झेली लेकिन उन्हें 'शब्द-रूप' गुरु नहीं मिले। अनेकों ही लोग दिलगीर हो गए कि किसी न किसी तरह हमें गुरु की एक झलक मिल जाए!

गुरुदेव ने हमें हमारे अच्छे कर्मों का बहुत बड़ा इनाम दिया है कि हमारे नसीब में उस महान गुरु के दर्शन लिख दिए। महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा महात्मा चतुरदास था। वह कहा करता थाः

सोहणे दे दर्शन दी खातिर लख्खां लोग फकीर होए।

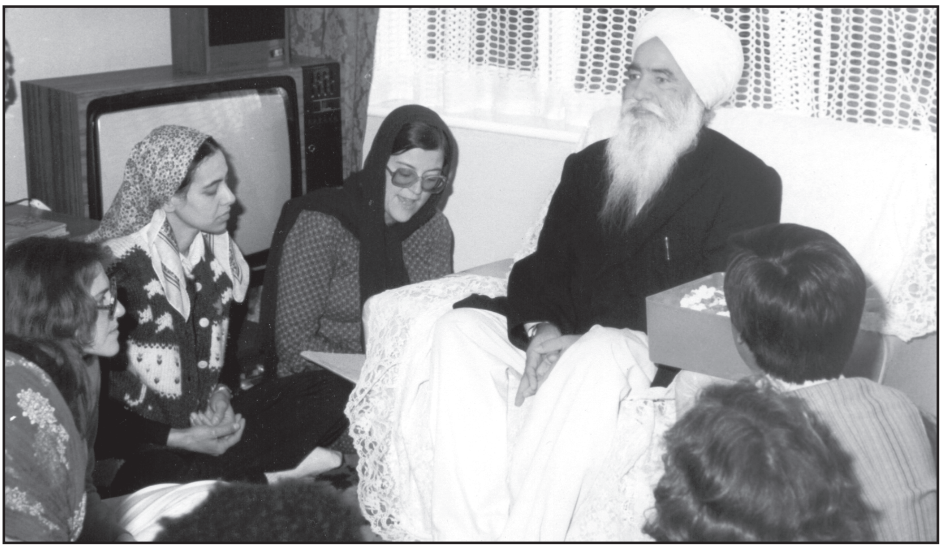

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा, पूर्ण कर्म होए प्रभ मेरा।
ऐह बेनती सुन प्रभ मेरे, देह नाम कर अपने चेरे॥

गुरु अर्जुनदेव जी अपने गुरु रामदास जी के आगे नम्रता से प्रार्थना करते हैं, ''तेरा दर्शन ही मेरा जीवन है। अब मेरी यही तमन्ना है कि तू मुझे 'नाम' देकर अपना शिष्य बना ले।'' सच्चखंड पहुँचकर भी महात्मा यही इच्छा रखते हैं कि हम अपने गुरुदेव के शिष्य बने रहें। वे जानते

हैं कि उन्हें सच्चखंड, नूरी देश में ले जाने वाला गुरु ही था। इसलिए वे गुरु का धन्यवाद करते हैं। मैं बताया करता हूँ जिसका गुरु से फायदा हुआ हो उसका हृदय प्यार से गदगद हो जाना चाहिए।

अपनी शरण राख प्रभ दाते, गुरु प्रसाद किने विरले जाते।

आप विनती करते हुए कहते हैं, ''तूने मुझे अपना शिष्य बना लिया है अब तू मुझे अपनी शरण में ही रखना।'' जिन लोगों पर गुरु की कृपा होती है सिर्फ वही लोग जानते हैं कि हम लोग इकट्ठे होकर उसका गुणगान कर लेते हैं, उसकी याद में बैठ जाते हैं।

सुनो बिनो प्रभ मेरे मीता, चरन कमल बसहो मेरे चीता।

आप प्यार से कहते हैं, ''मेरी अरदास और विनती यही है कि तेरे नूरी और प्यारे चरण मेरे दिल में बसते रहें।''

नानक एक करे अरदास, बिसर नहीं पूरन गुणतास॥

आखिर में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''मेरी यही प्रार्थना है कि तू हमें मत बिसारना। हमारी आँखों में हर समय तेरा दर्शन और जुबान पर हर सांस के साथ तेरा सिमरन बसता रहे। तू गुणों का भंडार है। हम निर्गुण हैं। तू हमें मत बिसारना।

हमारे ऊँचे भाग्य थे कि उन्होंने हमें प्यार की कणी बख्शी। यह उनकी ही दया थी कि हम उनकी याद में इकट्ठे होकर बैठ सके। आप जानते हैं कि इस कलयुग में जीव कितना फैल चुका है, दुनिया के पदार्थों में कितना मशगूल है। यह उस परमात्मा सावन-कृपाल की दया ही थी कि उन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान और प्यार बख्शा।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोगों को इन दस दिनों में जो गुरु चर्चा, गुरु प्यार की प्ररेणा मिली है उसे अपने घरों में जाकर भजन-सिमरन द्वारा जारी रखेंगे, कीमती समय का पूरा फायदा उठाएंगे।

U U U

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पड़ाव

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

गुरु नानकदेव जी की बानी

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में एक बार नहीं करोड़ों बार नमस्कार है। उन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया, अपने रहम की भिक्षा डाली और अपनी भक्ति करने का मौका दिया। उन्होंने इस गरीब आत्मा पर इस तरह दया की जिस तरह गुरु रविदास जी ने धोबियों की लड़की पर दया की थी। सतगुरु कुलमालिक का अपना ही तरीका होता है वे जिसे चाहे अपनी भक्ति दें! जिसे चाहे अपनी भक्ति से दूर हटाए!

गुरु नानकदेव जी ने कहा है, ''परमात्मा ने खुद ही सब जीव-जन्तु पैदा किए हैं, उसे जैसा मंजूर था सब जीवों को वैसे काम में लगा दिया; जिन्हें जन्म-मरण के कष्ट से बचाना है उन्हें अपनी भक्ति में लगा दिया बाकी के दुनियादारों को अपनी भक्ति से दूर कर दिया।''

गुरु नानकदेव जी फिर कहते हैं कि हे परमात्मा! मैं घूमता-घूमता थककर तेरी शरण में आया हूँ, तू मुझे अपनी भक्ति का दान दे। गुरु का दिया हुआ दान न खाकर खत्म होता है, न खर्च करके खत्म होता है और न ही किसी को देने से खत्म होता है; वह अटूट भंडार है।

सतगुरु सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, ''उस भंडारी का क्या फायदा जिसके भंडार में दात है ही नहीं और उस दाते का भी क्या फायदा जिसके भंडारे में दात तो बेअंत हो लेकिन वह बांटे ना?''

हमारे सतगुरु महाराज सावन ने 45 साल और महाराज कृपाल ने 25 साल तक दोनों हाथों से दया की दात लुटाई। देने वाला तो देने के लिए ही आता है लेकिन मसला तो लेने वाले का है कि हम दुनिया के सामान के ग्राहक हैं या 'शब्द-नाम' गुरु के ग्राहक हैं?

जब मैं पश्चिम में गया तो मैंने वहाँ सबको प्यार से यही समझाया कि वह महान हस्ती आज भी दोनों हाथों से दात बांट रही है। मसला तो लेने वालों का है जैसा-जैसा हमारा बर्तन बना होता है वह उसमें वैसी ही दात डालता है। सच्चे पातशाह कहा करते थे, ''सुराही तभी झुकेगी जब प्याला खाली होगा अगर प्याला पहले से ही दुनिया की मैं-मेरी या हौमें से भरा हुआ है तो वहाँ सुराही कैसे झुकेगी?''

अगर हम 'शब्द-नाम' के ग्राहक हैं तो परमात्मा हम पर रहम करेगा, वह रहम का समुद्र है। उसके रहम का समुद्र हमेशा ही उछलता रहता है। जब रहम का समुद्र उछलता है तो वह परमात्मा किसी न किसी सन्त-महात्मा के रूप में आकर हम पर रहम करता है क्योंकि यह उसका खुद का ही विधान है। उसने सदा ही इंसानों में बैठकर अपना भेद बताया, हम पर रहम किया।

हम जिन ऋषियों-मुनियों के चित्र देखते हैं वे भी इंसान की शक्ल लेकर आए। पिछले गुरु साहिबान भी इंसानों की ही शक्ल लेकर आए। इसी तरह परमात्मा सावन-कृपाल के रूप में हमारे बीच आकर रहे। उन्होंने भी हमारे बीच रहकर हमारी तरह खाना खाया, हमारी तरह चलते-फिरते और अभ्यास करते रहे। हम परमात्मा का धन्यवाद जुबान से नहीं कर सकते क्योंकि जुबान में यह ताकत ही नहीं। केवल एक ही तरीका है कि हम अपने दिल, दिमाग को एक करके आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाकर सच्चा धन्यवाद करें।

आप जानते हैं कि आज शादी है। शादी बहुत पवित्र बंधन होता है। इस शादी के जोड़े का संजोग ज्ञान बहन जी ने बनाया है। सदा ही यह परंपरा रही है कि सब राजा-महाराजाओं ने अपनी लड़कियों को छूट दी कि तुम्हें जो वर पसंद है तुम उसके गले में वरमाला डाल दो।

महाराज कृपाल कहते थे, ''यह बंधन परमात्मा की तरफ से होता है। शादी के बाद लाश ही उस घर से निकले। पति-पत्नी को अलग होने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि शादी की महानता इस तरह है कि अलग-अलग शरीरों में रहते हुए एक ज्योत बनकर रहें।

एक ज्योत दोए मूर्ति, धन्य पिर कहिए सोए।

सन्तों की शिक्षा लड़के और लड़की दोनों के लिए एक जैसी होती है। वे मियां-बीवी धन्य हैं जो एक ज्योत बनकर रहते हैं और एक-दूसरे की इज्जत करते हैं। शादी का मतलब भोग-वासना नहीं होता यह तो एक-दूसरे के साथ मिलकर जिंदगी का सफर आसान बनाना होता है; जिंदगी को स्वर्ग बनाना होता है।

धीरे-धीरे हमारे समाज में बहुत कुरीतियाँ आ चुकी हैं। आज दहेज का रिवाज चल रहा है। होटल में बहुत खर्च होता है। गरीब के लिए लड़की की शादी करना बहुत मुश्किल है। यही कारण है कि अगर लड़की पैदा होती है तो लोग नफरत करते हैं। आत्मा तो लड़के और लड़की में एक ही होती है।

मैंने सारे संसार में यही होका दिया कि लिंग भेद पारब्रह्म से नीचे है। जब हम पारब्रह्म में पहुँचकर अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेते हैं तो वहाँ कोई लिंग भेद नहीं। पारब्रह्म पहुँची आत्मा यह नहीं कह सकती कि मैं औरत हूँ या मर्द हूँ। मैं अमेरिका की रहने वाली हूँ या हिन्दुस्तान की रहने वाली हूँ। इसलिए लड़की को बुरा कहना या लड़के को अच्छा कहना हमारी भूल है। हमें चाहिए कि हम लड़कियों को भी उतना ही आदर-सत्कार दें जितना लड़कों को देते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा ने हमारे मुल्क में बहुत कुछ दिया है लेकिन गरीबी हमारी अपनी बनाई हुई है। हम लोग जिंदगी की सारी कमाई एक शादी पर ही लगा देते हैं। आप लड़कियों के सामान से भरे हुए संदूक देख लें! क्या हम इस तरह पैसा बेकार नहीं कर देते? पश्चिम में ऐसा रिवाज नहीं है। यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जो अहमदाबाद गए थे। वहाँ ग्रुप में भी सबको पता नहीं था कि वहाँ कोई शादी हुई है। मेरे पास केवल वही जोड़ा आया और उनके साथ दो-चार प्रेमी थे,

जिन्होंने वीडियो बनानी थी ताकि निशानी रह जाए। हमने शादी की महानता को समझना है। अब शादी की रस्म है।

गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है जोकि गौर से सुनने वाला है। इस शब्द में गुरु नानकदेव जी हमारी जिंदगी के दस **पड़ावों** का क्रमवार जिक्र कर रहे हैं। आप इसे अवस्था कह लें या स्टेशन कह लें! हम बचपन से लेकर मौत तक इन दस **पड़ावों** को मूर्खता और अज्ञानता में व्यतीत कर देते हैं अगर भाग्य से गुरु मिल जाए! वह अंदर हमें हमारे घर जाने का रास्ता बता सकता है। आज तक गुरु के बिना किसी की अज्ञानता का अंधेरा न दूर हुआ है और न हो ही सकता है। हमें हर **पड़ाव** पर गुरु की जरूरत पड़ती है।

सबसे पहले गुरु का काम माता करती है। वह प्यार भरी आँखों से बच्चे को अपने घराने की बोली सिखाती है, बहन-भाइयों का रिश्ता बताती है। फिर बहन-भाई गुरु का काम करते हैं वे अंगुली पकड़कर हमें चलना सिखाते हैं। जब हम बड़े होकर स्कूल, कॉलेज जाते हैं तो हमारा कई उस्तादों और गुरुओं से वास्ता पड़ता है। जब और बड़े हो जाते हैं तो कौमों, मजहबों और लीडरों की ट्रेनिंग लेते हैं तब हमारा कई बुजुर्गों से वास्ता पड़ता है, वे हमारे गुरु का काम करते हैं।

हमें जिंदगी के हर मोड़ पर गुरु की जरूरत पड़ती है। जब हम रूहानियत के मसले पर आते हैं तो हमें गुरु की सबसे ज्यादा जरूरत होती है लेकिन उस समय हम भूल जाते हैं, लापरवाह हो जाते हैं कि हमें किसी गुरु की जरूरत नहीं। जो कौमें, समाज यह कहते हैं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं; गुरु पहले ही हो चुके हैं अब नहीं होंगे यह उनकी भूल है, लापरवाही है।

महाराज जी बताया करते थे अगर कोई बच्चा दो युग या चार युग पहले पैदा हुआ हो आज की तरह ही उसे पैदा करने वाले उसके माता-पिता थे। उस समय के बच्चे को भी माता के दूध की उतनी ही जरूरत थी जितनी आज पैदा हुए बच्चे को है।

इसी तरह जब से यह संसार बना है वह परमात्मा अपने प्यारे बच्चों को सन्तों के रूप में भेजता रहा है। हमें आज भी परमात्मा की उतनी ही जरूरत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

युग-युग सन्त भले प्रभ तेरे, हर गुण गावे रसन रसेरे।

सन्तों का रास्ता न बंद हुआ है न होगा ही। जिनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक नहीं, विरह नहीं, तड़प नहीं वही लोग यह कह देते हैं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

अग्नि लगी आकाश को, झाड़-झाड़ पैंण अंगियार।
सन्त न होते जगत में, ते जल मरता संसार॥

पलटू साहब कहते हैं कि सन्त-महात्मा दुनिया के भले के लिए टट्टी-पेशाब और बीमारियों का खोल धारण करके इस संसार में आते हैं। जैसे पेड़ अपना फल नहीं खाते, कुआं अपना पानी नहीं पीता।

झाड़ नहीं फल खात है, नहीं कूप को प्यास।
पर स्वार्थ के कारणे, प्रगटे पलटू दास॥

गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था, ''मैंने बहुत कठिन तपस्या की, मैं दो से एक रूप हो गया। जब परमात्मा ने मुझे हुक्म दिया कि मैं तुझे अपना प्यारा बेटा बनाकर संसार में भेज रहा हूँ उस समय मेरा दिल तो नहीं करता था कि मैं संसार में जाऊँ लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म टाल नहीं सका। मैंने परमात्मा के चरणों में अपना सिर झुका दिया।'' प्यारा बेटा वही कहलवा सकता है जो पिता का आज्ञाकारी हो। जो बेटा पिता का आज्ञाकारी नहीं होता वह पिता की खुशी प्राप्त नहीं कर सकता। आप कहते हैं:

मैं हूं परम पुरख का दासा, देखन आयो जगत तमाशा।

सन्त इस संसार को एक तमाशे की तरह समझते हैं। जिस तरह तमाशा करने वाले को तमाशा उजड़ने पर कोई कष्ट नहीं होता और तमाशा चलते हुए भी उसे कोई खुशी नहीं होती। वह तो अपनी ड्यूटी

बजाकर हमें तमाशा दिखा रहा होता है। गुरु गोविंद सिंह जी तो यहाँ तक कहते हैं, ''जो मुझे परमात्मा कहकर बुलाएंगे वे नरक में जाएंगे। मैं तो उस परमात्मा का दास हूँ।''

जो मोको परमेश्वर उचरे, सब नरक कुंड में पड़हे।

सन्त इस संसार में आकर यह नहीं कहते कि आप हमें परमात्मा कहें। वे तो गरीब बनकर बहुत छोटे तरीके से अपना जीवन बिताते हैं। अपने आपको संगत का सेवादार कहते हैं।

जिसका एक बार अपने प्यारे से मिलाप हो जाए, वह बिछोड़े को गले नहीं लगाएगा। वह इस जलती-सड़ती विषय-विकारों की दुनिया में आकर खुश नहीं होगा अगर किसी को स्वर्ग की सैर करने को मिले तो वह कल्लरो में मिट्टी नहीं उड़ाएगा। जिसे अमृत पीने को मिले वह जहर नहीं खाएगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु दाता गुरु हिवै घरु, गुरु दीपकु तिह लोइ।

गुरु 'नाम' का दाता बनकर आता है और नाम का दान करता है। महाराज जी मिसाल देकर समझाते थे जिस तरह एक जेलखाना है। उस जेलखाने में कैदियों को अच्छा खाना, ठंडा पानी और अच्छे कपड़े नहीं मिलते। एक परोपकारी कैदियों के लिए अच्छे खाने का इंतजाम कर देता है। दूसरा परोपकारी ठंडे पानी का इंतजाम कर देता है। तीसरा परोपकारी सर्दी में कम्बलों और रजाइयों का इंतजाम कर देता है; उन्हें सहूलियतें जरूर मिल जाती हैं लेकिन वे कैदी ही रहते हैं। इसी तरह एक और परोपकारी आता है जिसके पास जेलखाने की चाबी है वह ताला खोलकर कहता है, ''मैं आपको आजाद करता हूँ जिसकी मर्जी है वह जा सकता है।'' परोपकार तो सबने किया लेकिन सबसे बड़ा परोपकार उस चाबी वाले का था।

सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि हम पुण्यदान करते हैं नेक कर्म करते हैं तो सेठ-साहूकार बनकर इस संसार में आ जाते है। स्वर्ग

बैकुंठों में जाकर अपना बिस्तर लगा लेते हैं। हाथ में से झाड़ू निकल जाता है, हुकूमत की बागडोर मिल जाती है लेकिन फिर भी हम जन्म-मरण और दुःखों के बीच कैदियों की तरह ही रहते हैं।

जिस संसार को हम इन आँखों से देखते हैं यह एक बहुत बड़ा जेलखाना है। हमें इसके न इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है और न ही इसकी गहराई का पता है। परोपकारी महात्मा 'नाम' की चाबी लगाकर हमें आजाद कर देते हैं। वे आजाद ही नहीं करते बल्कि हमारे साथ होकर उस रास्ते में मदद भी करते हैं। हम सभी दान करते हैं और करना भी चाहिए। हम तन, मन और धन सब कुछ दे देते हैं लेकिन सबसे ऊँचा दान सतगुरु का है। आत्मा का दान सिर्फ सतगुरु ही देते हैं।

जिया दान दे भक्ति लायन, हर स्यों लैण मिलाए।

सन्त, सेवक को अपनी आत्मा का दान देते हैं। वे इस दान की कोई फीस नहीं लेते, अखबारों में प्रचार नहीं करते। वे यही कहते हैं कि हमें हमारे सतगुरु ने दया करके यह दान मुफ्त में दिया है हम भी यह दान मुफ्त में ही देते हैं।

आप कहते हैं कि गुरु दाता है; वह बर्फ की तरह ठंडा है। हमारी आत्मा की जन्म-जन्मांतरों की तड़प 'नाम' की कमाई करके पूरी हो जाती है। गुरु की ज्योत तीनों भवनों तक प्रकाश करती है। जो गुरु से 'नाम' लेकर नाम की कमाई करता है उसे महाआनन्द मिलता है।

अमर पदारथु नानका, मनि मानिऐ सुखु होइ॥
पहले प्यार लगा थन दुध, दूजे माए बाप की सुध॥

गुरु साहब **जिंदगी के दस पड़ावों** का जिक्र करते हुए कहते हैं कि हम मूर्खता और अज्ञानता में इन **दस पड़ावों** को खो देते हैं हम माता के पेट में उल्टे लटके होते हैं, गंदी नाली हमारी नाक के ऊपर से जाती है। हम वहाँ सांस-सांस के साथ परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि

हे परमात्मा! तू मुझे इस जेलखाने से बाहर निकाल मैं तेरा दसवंद निकालूँगा, तेरी भक्ति करूँगा। उस समय की फरियाद सुनकर वह प्रभु दस महीने बाद इसे माता के पेट से बाहर निकालता है। बाहर निकलकर जब इसे हवा लगती है, यह देखता है कि घर वाले खुश हो रहे हैं; यह माता के पेट में किए गए वायदे और कष्ट भूल जाता है।

मैं 1944-45 में जब पहली बार लाहौर गया। उन दिनों हमारी आर्मी पेशावर के पास नशहरे में रहती थी। हमें लाहौर का अजायबघर देखने का मौका मिला। मैंने वहाँ देखा कि एक कलाकार ने माता के पेट में इस तरह का बच्चा दिखाया, जो छोटी सी जगह में उल्टा लटका हुआ था। मैं उस पिक्चर को करीब सवा घंटे तक देखता रहा। मेरे दिल में यही था कि इंसान ऐसी तंग जगह में कैसे उल्टा लटका रहता है?

पहले पड़ाव में - बाहर आकर जब इसे माता का दूध मिलता है तो इसे माता के स्तनों से प्यार हो जाता है। एक छोटा सा बच्चा अपनी माता को पहचान लेता है अगर इसे कोई और उठाए तो यह रोने लगता है। माता इसके पास से गुजर कर जिधर भी जाती है बच्चे की आँखें उसी तरफ घूमती हैं क्योंकि इसकी सूंघने की शक्ति काम करती है यह पहचान लेता है कि यह मेरी माता है।

दूसरे पड़ाव में - बच्चा अपने माता-पिता को पहचानता है।

तीजे भया भाभी बेब, चौथे प्यार उपन्नी खेड॥

जब बच्चा माता के पेट से बाहर आता है तब इसे पूरा ज्ञान होता है। जैसे-जैसे बच्चा माता-पिता से प्यार करता है वहीं से इसकी अज्ञानता शुरू होती है अगर बच्चे का पालन-पोषण गौर से करें तो पता चलता है कि बच्चा किस तरह का है?

मैं बताया करता हूँ कि जब हमारे गुरमेल बलवन्त की सुखपाल पैदा हुई, उस समय आश्रम में कोई और बच्चा नहीं था, वह अकेली ही थी। उसे पिछली याद थी, जो उसे तीन साल तक रही। वह बैठी-बैठी

उठकर चल पड़ती। वह टोकरी और छड़ी पकड़कर कहती, ''मैं अपने घर जा रही हूँ, हमारा घर दूर है; वहाँ हमारा परिवार है।'' मैंने गेट वाले चौधरी को कह रखा था कि कहीं ऐसा न हो कि यह बच्चा बाहर चला जाए! कोई कुत्ता वगैरहा इसे उठाकर ले जाए लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ी हुई सब भूल गई।

तीसरे पड़ाव में - गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि अंदर से लिव टूटकर माता-पिता के साथ लग जाती है। माता-पिता बच्चे को सारी रिश्तेदारियाँ बताते हैं कि यह तेरी बहन है। यह तेरा भाई है। यह तेरी भाभी और यह मासी है।

चौथे पड़ाव में - इसकी खेल में रूचि हो जाती है। इसे खेल ही प्यारा लगता है। कोई भी अवस्था हो परमात्मा की तरफ ख्याल नहीं जाता। न ही कोई इसका ख्याल परमात्मा की तरफ लगाता है।

पंजवे खान पियन की तात, छीवें काम ना पूछे जात॥

पाँचवें पड़ाव में - किशोर अवस्था में आ जाता है फिर खान-पान की आदत बन जाती है; लज़ीज खाने अच्छे लगते हैं। जीभ का दास बनकर रह जाता है।

छठे पड़ाव में - बड़ा हो जाता है काम जोश मारता है फिर नहीं सोचता कि यह स्त्री किस जाति की है, मेरी क्या लगती है? कामी बेशर्म हो जाता है। यह रिश्ता ही भूल जाता है। काम के जोश में पास खड़ा इंसान भी नज़र नहीं आता। कबीर साहब कहते हैं:

कामी कभी न गुरु भजे, मिटे न संशा मूल।

कामी गुरु की भक्ति नहीं कर सकता क्योंकि सारा दिन उसके दिल में संशा रहती है कि मैं बुराई कर रहा हूँ।

उछलया काम काल मत लागी, आण सकल गल बांधया।
पर त्रिया मुख जोहे ना लागा, सिर अवसर न पछाड़या॥

माता-पिता देखते हैं कि लड़का-लड़की जवान हो गए हैं। लड़के वाले लड़की की और लड़की वाले लड़के की देखभाल करते हैं। देखभाल करके रिश्ता जोड़ देते हैं। शादी हो जाती है तो दिल में ख्याल आता है कि इससे आगे कहाँ जाना है? हमें बादशाही मिल गई है। जीव यह नहीं सोचता कि यह तो मेरे गले में फंदा पड़ गया है।

जब घर में आई नारी जी मन खुश होया भारी जी,यह कैद उम्र की सारी जी।

हम यह नहीं सोचते कि हमारी मुसीबतों की जिंदगी की शुरुआत यहीं से होती है। शादी होती है तो मन फूला नहीं समाता। बच्चे हो जाते हैं जिम्मेवारियाँ बढ़ जाती है। फिर क्या हाल होता है? लड़की की शादी करनी है, लड़के को पढ़ाना है। तब भी मन साथ ही होता है पता नहीं इसने हमारे साथ क्या करना है? स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान।

मेरे कहने का भाव शादी करना बुरा नहीं लेकिन शादी के महत्व को समझना है। महात्मा हमें समझाते हैं कि जैसे हम नुमाइश में जाते हैं वहाँ कहीं पर खिलौने होते हैं, कहीं पर बिजली का सामान होता है; कहीं अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ होती हैं। जब तक बच्चा अपने पिता की अंगुली पकड़कर उस नुमाइश में घूमता है तब तक उसे सुख, शान्ति और खुशी मिलती है अगर गलती से पिता की अंगुली छूट जाए तो सामान उसी तरह रखा होता है लेकिन बच्चे को कोई खुशी और शान्ति नहीं होती वह चीखना-चिल्लाना शुरू कर देता है।

इसी तरह अगर हम गृहस्थ में परमात्मा की अंगुली पकड़कर सफर तय करें तो संसार में चार दिन खुशी के गुजार सकते हैं लेकिन जब हम परमात्मा का सहारा छोड़कर अपने सहारे हो जाते हैं तो घर में पत्नी, बच्चे और सामान होते हुए भी कैसी खलबली मच जाती है?

अगर किसी का जवान बच्चा संसार छोड़ जाए तो उसके माता-पिता से बात करके देखें! कैसे उनकी रातों की नींद उड़ जाती है अगर

पत्नी या पति में बेइत्तफाकी हो जाए तो कैसे एक-दूसरे पर अभाव ले आते हैं, जिंदगी खुश्क हो जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों का जीवन इस तरह का होता है जिस तरह एक मक्खी शहद के किनारे बैठकर शहद खा लेती है और उड़ भी जाती है। जो मक्खी शहद के बीच में बैठ जाती है जब वह टांगें निकालती है तो पंख फंस जाते हैं; पंख निकालती है तो टांगे फंस जाती है। वह मक्खी शहद भी नहीं खा सकती, तड़प-तड़पकर जान दे देती है।

महात्मा हमें उस मक्खी की तरह जीना सिखाते हैं जो शहद के किनारे बैठकर शहद खाकर उड़ जाती है अगर हम परमात्मा की भक्ति करें तो हम गृहस्थ में भी चार दिन सुख के बिता सकते हैं।

सतवें संज किया घर वास, अठवें क्रोध होया तन नास॥
नावें धोले उब्बे साह, दसवें द्दा हुआ स्वाह॥

सातवें पड़ाव में - आप प्यार से कहते हैं कि जब हम बूढ़े हो जाते हैं, बाल सफेद हो जाते हैं तब घर के काम के लिए ही रह जाते हैं।

आठवें पड़ाव में - क्रोध करने लगते हैं। न घरवालों को सुखी रहने देते हैं न खुद ही सुखी रहते हैं लेकिन तब भी परमात्मा की तरफ ख्याल नहीं लगाते।

मैं गंगानगर में एक परिवार के घर गया जिन्हें मैं काफी सालों से जानता था। वहाँ की बुजुर्ग माता मेरे पास आई, काफी संगत भी आ गई इसलिए उसे मुझसे बात करने का मौका नहीं मिला। वह बैठी रही इतने में उसके बच्चे भी आ गए। उसके बड़े लड़के ने मुझसे कहा कि आप हमारी माँ की बात भी सुनें। फिर उस लड़के ने कहा कि हम जब भी बाहर जाते हैं तो यह पूछती है कि तुम कहाँ जा रहे हो? हम इससे बहुत कहते हैं कि माता! तू भजन कर। तब यह कहती है, ''मेरे बाल सफेद हो गए हैं अब मैं भजन करूँ?''

सोचकर देखें! उस बुजुर्ग माता की बात कोई नहीं सुन रहा था। सबने उसका मजाक उड़ाया। हम बूढ़ों की बात को हंसकर टाल देते हैं बेशक वह बेचारा कितना भी दुःखी क्यों न हो! गुरु साहब के समझाने का भाव यह है कि जब हम बूढ़े हो जाते हैं न खुद को चैन है न घरवालों को चैन है लेकिन तब भी हम परमात्मा की तरफ नहीं आते।

नौंवे पड़ाव में - जब कई बूढ़ों का शरीर नहीं छूटता तो लोग उन्हें मेरे पास लेकर आते हैं, कहते हैं कि इसके ऊपर दया करो ताकि यह आगे चला जाए। मैं बूढ़े से कहता हूँ, ''बाबा! तू राम-राम कर।'' वह बूढ़ा कहता है कि मैं दुःखी हूं और तुझे राम-राम की पड़ी है।

दसवें पड़ाव में - जब हम मुर्दों को प्रत्यक्ष अग्नि में जलते हुए देखते हैं तब भी सोचते हैं कि हमने बूढ़ा नहीं होना। शायद हमारे लिए तो ऐश-इशरतें, शराब-कबाब ही हैं। मौत तो और लोगों के लिए है हमारे लिए नहीं।

गए संगीत पुकारी धाओ, उडया हंस दसाए राहो॥

जो संगी-साथी उठाकर श्मशान भूमि में ले जाते हैं वे जब घड़ा तोड़ते हैं उस समय बेशक उन्हें रोना आए या न आए लेकिन वे फर्जिया दहाड़े मारते हैं। आग लगाते समय भी सब कुछ दिखावे का ही करते हैं। ये सब दो चार मिनट ही होता है उसके बाद हम अपनी-अपनी बातें शुरू कर देते हैं। उस प्राणी के लिए दो-चार मिनट ही रोते हैं फिर उसे भूलकर अपने-अपने घर आकर कारोबार में लग जाते हैं।

अगर 'नाम' लिया हो, गुरु मिला हो तो रास्ता अपने आप खुल जाएगा; आगे गुरु खड़ा मिलेगा वह ले जाएगा अगर 'नाम' नहीं मिला तो यम तैयार बैठे होते हैं; यमों का रास्ता खुल जाएगा। यह **दसों पड़ावों में** जिदंगी गुजारता है; जन्म से लेकर मौत तक अज्ञानता और मूर्खता में ही अपना जीवन व्यतीत कर जाता है।

आया गया मोया नाओ, पीछे पत्तल सद्दो काओ॥

अगर हम मरे हुए को मरा हुआ समझें तो क्या हम उसके लिए कोई पाठ वगैरह करवाएंगे? हम उसको मरा हुआ नहीं समझते इसलिए हम उसके लिए चारपाई और रजाई इत्यादि भी देते हैं।

मैं यह बात कई बार बताया करता हूँ कि जब मेरे पिताजी ने चोला छोड़ा उस समय चारपाई देने लगे तो चम्मच रह गया। मेरी माता भागी हुई आई और भाई से बोली कि चम्मच रह गया है। मैंने भाई से कहा, ''ले भाई! इस चम्मच की भी अरदास कर दे।'' कहने का भाव अगर हम मरे हुए को मरा समझें तो क्या इतना सामान दें?

चाहे बूढ़ा घुटने रगड़ता हुआ चारपाई पर ही मर गया हो! जीते जी बेशक हमने उसे पानी न दिया हो, उसकी कोई सेवा न की हो लेकिन उसके मरने के बाद हम उस दिन का श्राद्ध रखते हैं; मंदिर, गुरुद्वारों में उसके नाम का दान करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जीवित पितर न माने कोऊ, मूऐ श्राद्ध कराही।
पितर भी बपुरे को को खाहे, कौआ कूकर खाही॥

सोचकर देखें! जब बिना पते के पत्र नहीं पहुँचता तो हमारा दिया हुआ हलवा प्रशाद मरने वाले तक कैसे पहुँच जाएगा? मैंने कई बार सतसंग में बताया है कि मेरा एक रिश्तेदार था, उसके पिता के साथ हमारा बहुत प्यार था। जब उसका पिता गुजर गया तो उसके लड़के ने मुझसे कहा, ''आपका मेरे पिता के साथ बहुत प्यार था, आज मेरे पिता का श्राद्ध है और हम आपको खाना खिलाना चाहते है।'' मैंने उससे कहा, ''बेशक मुझे खाना खिला दो लेकिन उसे तो मिलेगा नहीं।'' उस लड़के ने कहा कि आप ऐसा मत कहें। मैंने कहा, ''मैं तेरे नाम की रोटी खा लेता हूँ अगर तुझे कोई सहारा न हुआ तो तेरे पिता को कैसे होगा? हमारा मुँह कोई लैटर बाक्स तो नहीं कि यहाँ से खीर डाली और वहाँ से निकल जाएगी। यह सब अंधविश्वास है।''

सभी सन्त कहते हैं कि जीवित माता-पिता की सेवा करें, उनका आदर करें। उन्होंने भी आपके ऊपर परोपकार किया है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जब बच्चा जन्म लेता है तो माँस का एक लोथड़ा होता है। वह अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उड़ा सकता। माता-पिता ने उसके ऊपर बहुत उपकार किया होता है लेकिन बच्चे जीते जी माता-पिता की कद्र नहीं करते और उनके मरने के बाद खूब पैसा लुटाते हैं।''

नानक मनमुख अंध प्यार, बाज गुरु डूबा संसार॥

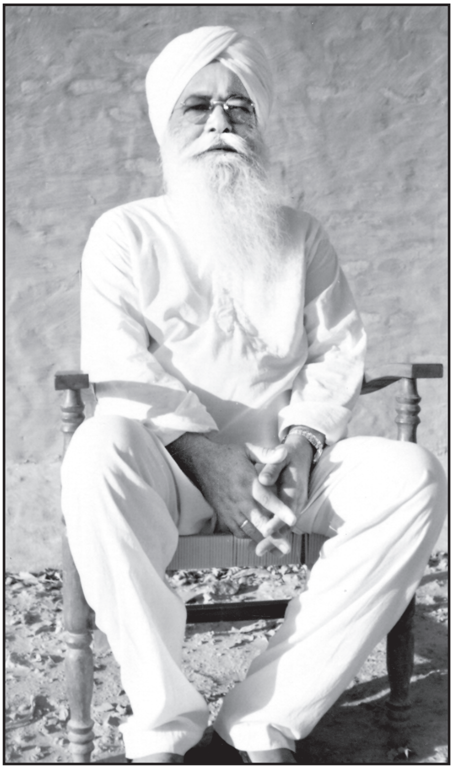

गुरु नानकदेव जी किसी एक समाज का नाम नहीं लेते। सन्तों की लेखनियाँ, कहानियाँ व शब्द किसी खास समाज के लिए नहीं होते। सन्तों की लेखनियाँ हर समय पर सही होती हैं। हम खुद अंधे हैं और अंधों से ही रास्ता पूछते हैं। खुद तो कुएं में गिरते हैं और दूसरों को भी गिराते हैं। जब तक हमें कोई पूरा महात्मा नहीं मिलता; जिसने जिंदगी में खुद ये **पड़ाव** तय किए हों, तब तक हम इस अज्ञानता के अंधेरे से नहीं बच सकते।

हमने गुरु नानकदेव जी के इस छोटे से शब्द को समझना है कि हम अज्ञानता में जिंदगी के **दस पड़ाव** खोकर चले जाते हैं। बचपन, जवानी, बुढ़ापे के किसी भी **पड़ाव** में परमात्मा की तरफ नहीं आते। हमें परमात्मा ने अमोलक जामा दिया है। हम इस जामे में परमात्मा की भक्ति करके अपने जीवन को सफल बनाएं; जो मौका मिला है उससे पूरा फायदा उठाएं।

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

शादी – तलाक

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : *महाराज जी! मेरा सवाल **शादी** और **तलाक** के बारे में है। कोलम्बिया में धार्मिक रीति-रिवाजों और कानूनी रूप से दोनों तरह की **शादी** होती है। उन दोनों शादियों में **तलाक** की कोई गुंजाइश नहीं लेकिन फिर भी लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं और बाद में वे लोग दोबारा शादी कर लेते हैं। ऐसे लोग जब एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं तो क्या उनके आपस के कर्म खत्म हो जाते हैं? या जब वे नया सम्बन्ध कायम करते हैं तो क्या वे ऐसे कर्म बनाते हैं जो कभी खत्म न हों?*

बाबा जी : महाराज कृपाल कहा करते थे कि हम अपने पिछले संयोग के कारण ही **शादी** के बंधन में बंधते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पिछले जन्मों के लेन-देन के कारण ही इस जन्म में हमें प्यार और नफरत होती है अगर हमारा पीछे का लेन-देन अच्छा है तो मियां-बीवी और बच्चों में प्यार बन जाता है। हम एक-दूसरे के प्रति नफरत नहीं करते बल्कि इज्ज़त करते हैं।

अगर पिछले जन्म से ही हमारा एक-दूसरे के प्रति लेन-देन बिगड़ा हुआ है तो हमें एक-दूसरे के प्रति नफरत होगी। हम वहाँ तक पहुँचे नहीं होते कि यह समझ सकें! हमारा पिछला कर्म अभी बाकी है या अलग होकर हम एक और नया कर्म बना रहे हैं? ऋषियों-मुनियों ने ऐसे कानून बनाए हैं कि **शादी** चाहे किसी भी देश में हो, धार्मिक रीति-रिवाज से या कानूनी रूप से हो किसी में भी **तलाक** लेने की गुंजाइश नहीं होती। ये सब हमारे मन के बहाने हैं कि हम अलग होकर या तलाक लेकर कह देते हैं कि हमारे कर्म खत्म हो गए हैं।

जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे अपने धर्मग्रन्थों में हमें यही संदेश देकर गए है कि भूलकर भी **तलाक** नहीं करना चाहिए। जिसके साथ एक बार **शादी** हो जाए मरकर ही अलग होवें। महाराज कृपाल और गुरु नानकदेव जी भी यही कहा करते थे, ''मियां-बीवी मरकर ही अलग हों; जीते जी **तलाक** के बारे में सोचना भी गुनाह है।''

इस बारे में कई पति और पत्नियां पत्र भेजते हैं। मैं सदा यही सलाह देता हूँ कि **तलाक** देकर अलग हो जाना मसले का हल नहीं बल्कि इससे और कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। सच्चाई तो यह है कि हम **शादी** की महानता को समझने की कोशिश ही नहीं करते। परमात्मा ने ये जोड़े इसलिए बनाए थे कि हम एक-दूसरे की मदद करते हुए अपने जीवन को स्वर्ग बनाएं और आसानी से अपने जीवन का सफर तय करें।

मैं बताया करता हूँ कि **शादी** करवाना बुरा नहीं लेकिन हमें जो शादी के नियम बताए जाते हैं उन नियमों का पालन करना बहुत जरूरी है। मियां-बीवी के दिल में एक-दूसरे के प्रति प्यार होना चाहिए। दोनों को एक-दूसरे के प्रति आदर भरे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा नहीं कि पति जो चाहे पत्नी से कहे! पत्नी पर हाथ उठाए या घर में उसका कोई अधिकार ही न हो! या पत्नी जो चाहे पति से कहे! जब हम एक-दूसरे के प्रति आदर भरा व्यवहार नहीं करते हैं तो यही अलग होने का सबसे बड़ा कारण बनता है।

हम जानते हैं कि आजकल पश्चिम में यही कुछ हो रहा है, मियां-बीवी मामूली सी बात पर **तलाक** ले लेते हैं। क्या वही मियां-बीवी फिर एक-दूसरे के मिलाप के बिना जिंदगी गुजार लेते हैं? कई औरतों को पहले से भी बुरे पति मिल जाते हैं और कई मर्दों को पहले से भी बुरी पत्नियाँ मिल जाती हैं। कई लोग तो कई-कई बार **शादी** करवाते हैं, सारी जिंदगी परेशान रहते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यार तो सारी जिंदगी में एक के साथ ही हो जाए तो काफी है।'' आप तो यहां तक कहा करते थे कि जिस औरत के बत्तीस खसम हैं या जिस मर्द की बत्तीस पत्नियाँ हैं वे किस-किसको खुश करेंगे? देन-लेन और कर्मों का हिसाब तो एक के साथ ही पूरा करना मुश्किल है। कई लोगों के साथ देन-लेन बनाएंगे तो आपस में कब हिसाब चुका पाएंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

धन्य पिर ऐह ना आखिए बैंण इकट्ठे होय।
एक जोत दोय मूर्ति ते धन्य पिर कहिए सोय॥

मियां-बीवी का रिश्ता बहुत गहरा है। एक-दूसरे के प्रति इज्ज़त का व्यवहार करना हमारा पहला फर्ज है। शादी के बाद मियां-बीवी का जीवन ऐसा होना चाहिएः

तैनूं ताप चढ़े मैं हूंगा, तेरी मेरी इक जिंदड़ी।

अगर कोई महाराज सावन सिंह जी से पूछता, ''महाराज जी! क्या मैं **शादी** करवा लूँ?'' आप कहते, ''भई देख! अगर तू यह बोझ उठा सकता है तो बड़े शौंक से **शादी** करवा ले, शादी करवाना बुरा नहीं।'' अगर कोई यह पूछता, ''महाराज जी! मैं शादी न करवाऊँ?'' आप कहते, ''देख भई प्यारेया! अगर तू ऐसे ही जिंदगी गुजार सकता है, जगह-जगह ख्वार नहीं होगा तो तू शादी मत करवा।''

आमतौर पर देखा गया है कि किसी-किसी जोड़े के साथ ही गम्भीर समस्या होती है। आम लोगों ने **तलाक** को शुगल बना रखा है। मेरे पास एक मियां-बीवी आए; बीवी ने मुझसे कहा, ''मेरा मन करता है कि हम अलग हो जाएं।'' मियां ने मुझसे कहा, ''मैं इसके बिना मर जाऊँगा।'' मैंने उससे पूछा, ''बेटी! तुझे क्या तकलीफ है ताकि मैं इससे कहूँ कि यह तेरी सहायता कर दे?'' बीवी ने कहा, ''मुझे किसी तरह की कोई समस्या नहीं है। हमें इकट्ठे रहते हुए चार-पाँच साल हो गए हैं, मेरा ख्याल है कि अब हमारा अलग हो जाना ही ठीक है।''

77 आर.बी. का वाक्या है कि एक मियां ने गलती से सुबह अपनी बीवी को जगा दिया कि सुबह भजन करना अच्छा है, मुझे रस आया है चल! हम भजन करें। उस लड़की ने इंटरव्यू में कहा, ''इसने मेरी नींद हराम की है मैं इसके साथ नहीं रहना चाहती।''

आप सोचकर देखें कि यह भी कोई समस्या है अगर पति ने यह कह दिया कि मुझे भजन में रस आया है आ तू भी उठ और भजन कर। जबकि हर सतसंगी का फर्ज है एक-दूसरे से प्यार करें, प्यार से एक-दूसरे को सलाह दें कि तू भी भजन कर ले। कबीर साहब कहते हैंः

सुत्ता साध जगाइए, करे नाम का जाप।
तीनों से सुत्ते भले, साकत सिंह और सांप॥

प्यारेयो! सतसंग में बताया जाता है कि संसार में ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों, दिल में कोई लालसा न हो ताकि वह आसानी से शरीर छोड़ सके। आमतौर पर किसी के दस काम पूरे हो गए और पाँच अधूरे रह गए। किसी के पाँच काम पूरे हो गए और दो अधूरे रह गए। आखिरी समय में अधूरे कामों के संकल्प-विकल्प आँखों के सामने आते हैं कि मैंने यह काम नहीं किया। उन सकंल्पों के मुताबिक हमारा अगला जन्म बन जाता है। अगले जन्म में ये चीज़ें बड़ी आसानी से मिल जाती हैं लेकिन और बहुत सी समस्याएं मुँह खोले खड़ी होती है। इसी तरह हमारे जीवन का सिलसिला चलता रहता है।

सन्त-महात्मा आमतौर पर यही कहते हैं कि आप सिमरन करें। गुरु को अंदर प्रकट करें। आपका मन शान्त रहे ताकि अंत समय में आप हों आपका गुरु हो तीसरी कोई चीज़ आपको याद ही न आए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो शाम को घर आ जाए उसे भूला न जानें।'' यह अच्छी बात है कि जो लोग दोबारा इकट्ठे हो जाते हैं, वे ख्वार होने से बच जाते हैं। इकट्ठे होकर उन्हें दोबारा वही गलतियाँ नहीं करनी चाहिए जो उन्होंने पहले की थी बल्कि उनमें सुधार करना चाहिए। अपने जीवन को फिर से स्वर्ग बनाना चाहिए।

बेशक सन्तमत में किसी औरत को पति के साथ सती होने की इजाजत नहीं। हम राजस्थान के जिस इलाके में बैठे हैं यहाँ हमारी सरकार ने बहुत सख्त कानून बनाए हुए हैं। सती होने वाली को आत्मघात का दोष लगेगा। जो सती होने के लिए उकसाएगा उसे सात साल की सजा होगी। राजस्थान के मूल निवासी इसके लिए आंदोलन कर रहे हैं। पिछले सितम्बर महीने में एक नौजवान लड़की अपने पति के गुजर जाने पर उसके साथ सती हो गई थी। इस बात ने बहुत जोर पकड़ा हुआ है। उनके रिश्तेदार, भाई-बहन जेल में बंद हैं। सन्त आत्मघात करने की कभी भी इजाजत नहीं देते। सन्त तो यह कहते हैं:

सतियां ऐह न आखिए, जे मढ़या लग जलन।
सतियां से ही नानका, जे बिरह चोट मरन॥

जो पति के मरने पर उसके साथ चिता में जल जाती हैं वह मुक्ति प्राप्त नहीं करती बल्कि जो पति के गुजर जाने के बाद अपने पति की याद में पवित्र जीवन बिताती हैं, व्याभिचार नहीं करती; उनका चरित्र अच्छा होता है उन स्त्रियों की स्वर्गों तक पहुँच हो जाती है।

हमें पता ही है कि जब हमारी **शादी** टूट जाती है तो हम कोई महात्मा पुरुष तो हैं नहीं कि जो एक-दूसरे को माफ कर दें। बेशक हम जुबान से कह दें कि मैंने तुझे माफ कर दिया लेकिन मन की आदत है यह फिर भी दूसरे के प्रति नफरत करता रहता है। मैं बताया करता हूँ कि बुराई का मुँह सदा गिरावट की तरफ होता है। अभ्यासी को एक बुरा विचार ब्रह्माँड की चोटी से नीचे गिरा देता है। आप सोच सकते हैं कि जिन सतसंगियों का जीवन ऐसी समस्याओं से भरा होता है क्या वे भजन कर सकते हैं, अंदर तरक्की कर सकते हैं, क्या वे अपना नुकसान नहीं कर रहे होते?

एक बार शाम का समय था। हम आर्मी में से आए थे। महाराज सावन सिंह जी बैठे थे। हम में से एक आदमी ने कहा, ''महाराज जी! मेरी काफी चढ़ाई थी, मैं अंदर जाता था, सूरज-चन्द्रमा, तारे और प्रकाश

सब कुछ देखता था। यहाँ तक कि आपका स्वरूप भी मेरे अंदर प्रकाशमान था लेकिन अब मुझे अंधेरे के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आता।'' महाराज जी ने कहा, ''तुझे कोई समस्या होगी?'' उसने बताया कि मेरी पत्नी साथ छोड़ गई है, मुझे उसकी याद सताती है।

उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी जिसका उसके ऊपर बहुत बुरा असर हुआ। हम लोग अलग-अलग जीवन कर लेते हैं। जब वे मियां-बीवी एक-दूसरे के सामने आते हैं तो क्या सोचते हैं? क्या मन एक-दूसरे के प्रति समस्याएं खड़ी नहीं करता? क्या एक-दूसरे के साथ बिताया हुआ समय याद नहीं दिलाता? इससे अंदर परेशानी हो जाती है; जिनकी सुरत ऊपर जाती है वह भी नीचे आ जाती है।

अमेरिका, कोलम्बिया और यूरोप में भी बहुत से मजबूत मियां-बीवी मिलते हैं। ऐसा नहीं कि पश्चिम के सभी लोग **तलाक** लेते हैं। कमजोर मन बकरी की तरह होता है जो अपनी जिम्मेवारियों से भागता है। मजबूत मन हाथी की तरह होता है वह विश्वास के साथ शादी करवाता है, जिम्मेवारियाँ उठाता और उन्हें निभाता है।

एक प्रेमी : *अगर कोई प्रेमी सन्तमत से भटक जाए और सतसंग में आना बंद कर दे तो क्या हम उससे बातचीत करके उसे सतसंग में आने का न्यौता देकर या किसी भी तरीके से उसे वापिस लाने की कोशिश करें? या सबकुछ गुरु के भरोसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि जिस व्यक्ति को गुरु ने 'नामदान' दिया है वह उसकी देखभाल तो करेगा ही।*

बाबा जी : हाँ भई! बड़ा अच्छा सवाल है। यह सवाल हर सतसंगी के फायदे का है। सेवक मन के कहे भटक जाता है। आखिर में उसे वापिस आना पड़ता है क्योंकि गुरु सेवक को नहीं छोड़ता। मैं समझता हूँ कि सब कुछ 'शब्द-रूप' गुरु के हाथ में है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''गुरु हाथ से डोरी नहीं छोड़ता, ढीली जरूर कर देता है।''

मैं बताया करता हूँ कि सृष्टि को देखने के दो ही तरीके होते हैं। **जीव का दृष्टिकोण नीचे से ऊपर की तरफ देखना है और सन्तों का**

दृष्टिकोण ऊपर से नीचे की तरफ देखना है। जब हम ऊपर से नीचे की तरफ देखते हैं तो हमारी चढ़ाई ऊपर की तरफ हो जाती है, तब हमें समझ आती है कि पत्ते-पत्ते के अंदर शब्द-रूप गुरु है; सब कुछ वह खुद करता है। वह खुद ही जीव को 'नाम' के लिए, सतसंग के लिए बुलाकर लाता है। वह सब कुछ खुद ही कर रहा है, वह खुद ही नज़दीक लाता और दूर करता है। उसी दृष्टिकोण से गुरु नानकदेव जी ने अपने शब्द में कहा है:

आपे संगत सद बहाले, आपे विदा करावे।
आपे जल आपे दे शिंगा, आपे चुली करावे।
आपे बैठ परोसे भांडे, आपे ही बह खावे॥

वह आप ही संगत को बुलाता है। आप ही संगत को कतारों में बिठाता है, आप ही बर्तन परोसता है। आप ही आशीष देता जाता है कि हमारी बहुत सेवा हुई। सन्तों का दृष्टिकोण ऊपर से नीचे की तरफ होता है। आप रोज भजन पढ़ते हैं:

मैंनू तेरे बिना किसे दी ना लोड़ दातेया।

इस भजन में यही है कि तू मुझे जहाँ भेजता है मैं वहाँ जाता हूँ। सदा तेरा दिया हुआ ही खाता हूँ। मुझे तेरे बिना कोई और दिखाई ही नहीं देता। आप सोचकर देखें! अगर हमारी दृष्टि ऊपर से नीचे की तरफ देखने वाली बन जाए तो हम ऊपर पहुँच जाएंगे भटकेंगे नहीं।

आप एक भजन में यह भी पढ़ते हैं कि वह अपनी दवाई आप ही तैयार करता है, आप ही मरीज होता है, आप ही दवाई खाता है; आप ही बीमार होकर हाय! हाय! करता है और आप ही वैद्य बनकर आता है। जब हम जीव के दृष्टिकोण (नीचे से ऊपर की तरफ) से देखते हैं तो पता लगता है कि हर जीव अपना अच्छा या बुरा कर्म खुद बना रहा है, किसी खास ताकत के आधीन होकर दुनिया का कारोबार कर रहा है।

जो जीव मन के कहने पर गुरु के रास्ते से भटक जाता है। उस समय हम सबका फर्ज बनता है कि उस भटके हुए को गुरु के रास्ते

पर लाने की कोशिश करें क्योंकि गुरु के रास्ते से भटके हुए को 'नाम' के रास्ते पर लाना बहुत बड़ी सेवा है। सन्तमत में सेवा को सबसे उत्तम गिना गया है। सेवक को गुरु घर में मान मिलता आया है अगर उसका मन उसे अच्छे बुरे का ज्ञान रहने देता तो वह भटकता ही नहीं।

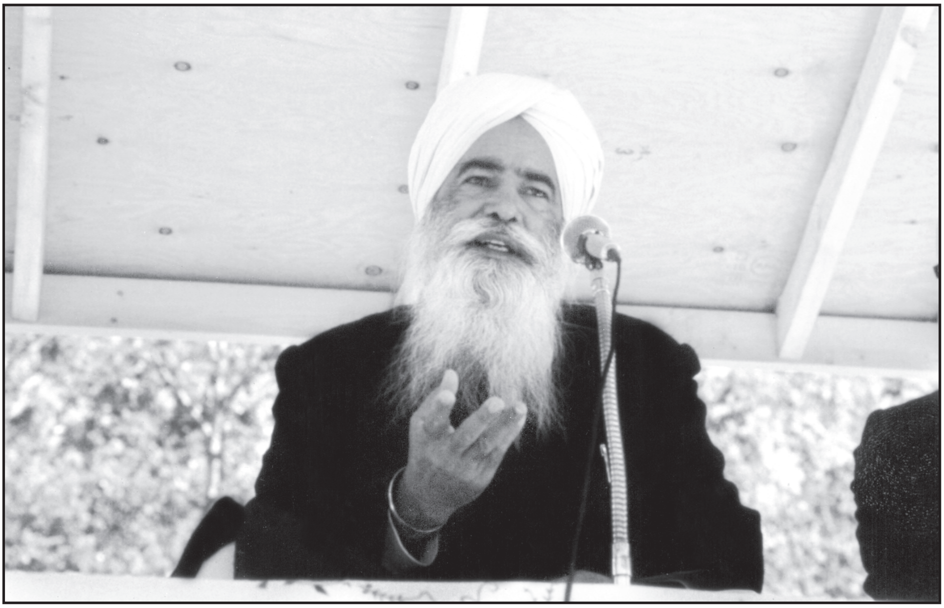

आपको पता ही है कि जब उसके कर्मों का भुगतान हो जाता है तो मन में सदा वे ख्याल नहीं रहते, वह फिर सतसंग की तरफ आ जाता है। पता नहीं वह कितने सालों के बाद सतसंग की तरफ आता है। उसके इतने साल खराब हो जाने पर उसे बहुत घाटा हो जाता है। सही रास्ते पर आकर वह भजन-सिमरन और सतसंग ही करेगा अगर हम थोड़ा सा परिश्रम करके उसे समझा दें तो हमें उसके भजन में से कुछ न कुछ जरूर मिलेगा।

ऐसे मौके पर हम दो किस्म के काम कर रहे होते हैं, एक तो हम उस भूली हुई प्रेमी आत्मा की सेवा कर रहे होते हैं; दूसरा हम गुरु के मिशन में मदद कर रहे होते हैं। आप गुरु की ड्यूटी की तरफ भी देखें!

गुरु कभी निराश नहीं होता। गुरु बहुत सब्र भरा होता है अगर काल इस जीव को बुरे से बुरे कर्म की सजा भी देता है फिर भी गुरु बक्शवाता है और वायदा करता है कि मैं इसे जरूर समझाऊँगा, यह भूला हुआ है इसकी गलती को माफ किया जाए। अब आप सोचकर देखें! अगर गुरु हमारी तरह यह सोचे कि इसे इसके हाल पर छोड़ दें तो फिर गुरु अपने सेवकों को कैसे ले जा सकता है?

महाराज कृपाल कागभसुंड का प्रसंग सुनाया करते थे कि वह घमंड में आकर अपने गुरु का अनादर कर बैठा। गुरु सब्र वाला था, चुप रहा लेकिन कुदरत का कानून किसी को माफ नहीं करता। गुरु निंदक के लिए कोई ठिकाना नहीं हो सकता। जब उसे दण्ड मिलने लगा, कड़ी योनियों में भेजने लगे तो गुरु की चीख निकल गई! यह अनजाने में गलती कर बैठा है आप इसे बख्श दें। गुरु के इतना कहने पर भी वह पूरी माफी का हकदार नहीं हुआ उसे नरक में भेजने की बजाय कौए की योनि दी गई।

हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि हिन्दुस्तान में हिरण्यकश्यप बहुत शक्तिशाली राजा हुआ है। वह अपना नाम जपवाता था। उसने भी अपने गुरु नारद की अवज्ञा की थी। उसे इतना बड़ा कलंक मिला कि ग्रन्थों में उसे दुष्ट कहकर लिखा गया है, वह नरक का हकदार हुआ। इसी तरह हमें रावण की कहानी मिलती है, उसके गुरु विष्णु भगवान थे। जब रावण, विष्णु भगवान की आज्ञा भंग करके विषय-विकारों में खज्जत हुआ तो उसकी भी हिरण्यकश्यप से बुरी हालत हुई। उत्तरी भारत के लोग हर साल रावण की नकल बनाकर उसे जलाते हैं, बुरा कहते हैं; सदा ही इसके सिर पर राख पड़ती है। मरने के बाद भी दुनियावी लोग इन्हें दुष्ट कहते हैं।

जरासंघ बहुत शक्तिशाली राजा था। उसकी कहानी में आता है कि वह विष्णु भगवान का द्वारपाल था, उसने विष्णु भगवान की आज्ञा भंग की। कृष्ण के साथ युद्ध भी किया। इतिहास में आता है कि उसकी भी

यही दुर्दशा हुई उसे किसी ने माफ नहीं किया। उसको भी दुनियावी लोग बुरा कहकर ही ब्यान करते है।

हमारे इतिहास बताते हैं कि गुरु जितना कोई भी हमदर्द नहीं। जो सेवक अंदर जाते हैं वे जानते हैं अगर हम कठिन से कठिन समय में भी सच्चे दिल से विनती करते हैं तो गुरु जरूर आता है, मदद करता है। अगर हमें किसी भटक चुकी आत्मा के साथ हमदर्दी है, जो अपना रास्ता छोड़कर काल के पंजे में आ चुकी है; बहुत दुःखी है। क्या हमें उस पर तरस नहीं आएगा? हमें उस पर तरस आना चाहिए क्योंकि उसके अंदर हमारा गुरुदेव बैठा है। हमारे अंदर उस आत्मा के लिए दर्द होना चाहिए कि शायद हमारे थोड़े से समझाने से यह रास्ते पर आ जाए! समय आने पर वह जरूर आपकी प्रशंसा करेगा, धन्यवाद करेगा।

गुरु गोविंद सिंह जी से उनके सेवकों ने पूछा कि आप जिस पर दयालु होते होते हैं उसे क्या देते हैं? आपने कहा, ''मैं जिस पर दयालु होता हूँ उसके घर किसी शिष्य को भेज देता हूँ। वह उसे खाना खिलाएगा, उसका अन्न पवित्र होगा। वह शिष्य वहाँ वचन सुनाएगा अगर मैंने इससे भी ज्यादा दया करनी हो तो उसे अंदर से ही प्रेरित करके उसके घर में साध-संगत रख देता हूं ताकि बहुत से लोग मिलकर वहाँ 'शब्द' बोलेंगे, गुरु कथा करेंगे और भूले-भटके सभी प्रभु भक्ति की तरफ लग जाएंगे। गुरु नानकदेव जी की लेखनियों में अनेकों जगह मिलता है कि वह घर, धरती और जीव अच्छे हैं जिनके घर सतसंगी जाते हैं, वहाँ भजन-पाठ करते हैं, सतसंग होता है। आप कहते हैं:

जित्थे नाम जपिए प्यारे, से अस्त्र सोन चौबारे।
जित्थे नाम न जपे मेरे गोविंद दा, सेई नगर उजाड़ी जिओ॥

वह झुग्गियाँ भी महलों जैसी शोभायमान होती हैं और वह बसता हुआ नगर भी किसी काम का नहीं जहाँ बैठकर परमात्मा का 'नाम' नहीं जपा जाता। प्यारेयो! आप जानते हैं जो भटक जाता है वह पहले प्रेमी होता है तभी 'नाम' लेता है और उसके अंदर गुरु का दर्द होता है

लेकिन हम आपको यह भी बताते हैं कि हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है। यह हर मौके की ताक में होता है कि मैं कब इसे सतगुरु के रास्ते से भटका दूँ! अगर हम भजन-सिमरन में लग जाते हैं, साध-संगत में हाजरी लगाने लग जाते हैं तो भटकते नहीं।

आप गुरुदेव महाराज कृपाल की तरफ देखें! आपके दिल में आत्माओं के लिए कद्र थी इसलिए आप लोगों को महाराज सावन के सतसंग में जाने के लिए किराए के पैसे दे देते थे। क्या यह छोटी सेवा है? क्या वे लोग भूले हुए नहीं थे जिन्होंने कभी सतसंग ही नहीं सुना था। इसलिए हमें आपकी शिक्षा पर अमल करना है अगर कोई भटकता है तो उसे प्यार से जरूर समझाएं।

एक प्रेमी : *गुरु और शिष्य का रिश्ता कब शुरू होता है? शिष्य के जन्म लेने के समय या जब गुरु उसे 'नामदान' देता है?*

बाबा जी : हाँ भई! मैं बताया करता हूँ कि यह पहले से ही तय होता है। जन्म लेने से पहले ही प्रालब्ध बन जाती है कि कब गुरु मिलेगा, इसे गुरु पर भरोसा आएगा या नहीं? गुरु रामदास कहते हैं:

जिन्हां मस्तक धुरो हर लिखया, तिन्हां सतगुरु मिलया।
अज्ञान अंधेरा कटया, गुरु ज्ञान घट बलया।
लद्‌दा रतन पदार्थों, फिर बोहर न चलया।
नानक नाम अराधया, अराध हर मिलया॥

यह पहले से ही तय होता है कि हमारे मस्तक में लिखे हुए के मुताबिक जिस दिन गुरु मिल जाता है, नाम मिल जाता है हम उस दिन को भाग्यशाली दिन समझते हैं। यही दिन हमारी जिंदगी में सबसे उत्तम दिन था जिस दिन हमे 'नाम' मिला। जिस तरह कोई प्यासे को पानी पिला दे! प्यासा आदमी पानी पिलाने वाले को अपना सब कुछ ही देने के लिए तैयार हो जाता है। हम संगत में आमतौर यह भजन पढ़ते हैं:

नानक सतगुरु तिन्हां मिलाया, जिन्हां धुरो पया संजोग।

U U U

धन्य अजायब

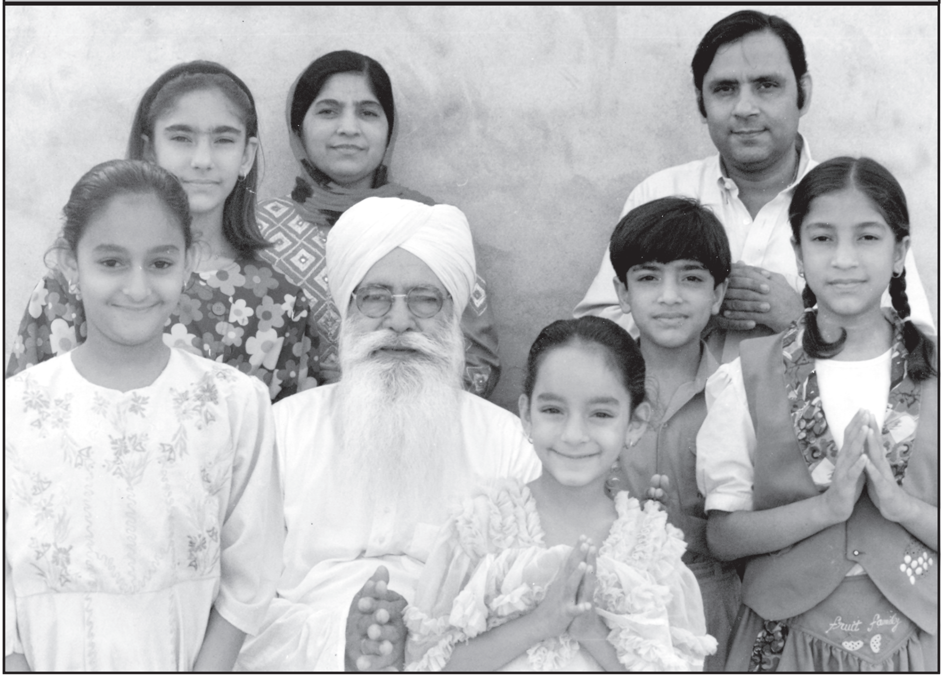

16 पी.एस आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

26, 27 व 28 अक्टूबर - 2007

23, 24 व 25 नवम्बर - 2007

28, 29 व 30 दिसम्बर - 2007

मुम्बई में सतसंगों के कार्यक्रम

9, 10, 11, 12 व 13 जनवरी - 2008

आरोग्य भूरा भाई भवन

शान्ति लाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई - 400 067

फोन : 022-221 88 353, 022-286 286 26, मो. 93246 51321